International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

राजस्थानी छपाई की विभिन्न भाँत (ठप्पा)

अनिता नागर

जुनियर रिसर्च फैलोए इतिहास विभाग मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर

सारांश :

प्रकृति का विहंगम दृश्य मनुष्य को रोमांचित करता है। वस्त्रों के रंगों एवं अलंकरणों की दृष्टि से रेगिस्तानी इलाका शेष प्रदेश से तनिक भिन्न रहा है। यहाँ गहरे, चमकीले रंग और बड़े–बड़े बूटे देखते ही बनते हैं। इसी कारण रेगिस्तान का नीरस वातावरण भी खिल उठता है। यहाँ की भाँतों में फूल–पत्ती, बेल–बूटे, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, मनुष्याकृति आदि सभी का सफल अंकन हुआ है। राजस्थान के छीपे और रंगरेजों ने प्रकृति प्रेम को पेड़ पौधों व फूलों से रंग तैयार कर वस्त्रों पर विभिन्न भांतों में उकेरा है। यहाँ सर्वाधिक विविधता लाल रंग में मिली है जैसे –

मारू थारे देश में उपजे तीन रतन।
इक ढोला, दूजी मरवण तीजो कसूमल रंग।

राजस्थानी वस्त्रों की छपाई में विभिन्न प्रकार की भाँत, रंग तथा उत्कृष्ट तकनीक सुस्पष्ट दिखाई देती है।

मूल बीज : छपाई (छाप), भाँत (ठप्पा), खड्ढी, बूटा, दाबू, सुरजमुखी, केला, पतासा, मोरड़ी।

परिचय :

राजस्थान अपने बहुरंगी वस्त्रों के लिए सदियों से विख्यात रहा है। यहाँ के छपे वस्त्र वैभव का उल्लेख प्राचीन एवं मध्यकालीन ग्रंथों में हुआ है। विश्व के कई संग्रहालयों में यहाँ के विभिन्न प्रकार की भांतो के रंगे छपे वस्त्र सुरक्षित है। पिछले दिनों फ्रांसीसी पुरातत्ववेत्ताओं ने मिश्र की पुरानी राजधानी अल्फोस्तान की खुदाई में मिली पुरानी कब्रें जिनमें मृत शरीर बड़ी आकर्षक छींटों में लिपटे हुए थे। इन छीटो के बूटे–बूटियों (भाँत) आज के राजस्थान गुजरात में छपी छींटों के बूटों से आश्चर्यजनक साम्य था। कुछ अलंकरण जैन पोथियों में चित्रित आकृतियों के पहने वस्त्रों के अभिप्रायों से मिलते है जो इसके यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पश्चिमी भारत (राजस्थान) में रंग–बिरंगी भांत की छपाई का उद्योग 14वीं शती में तो उन्नत शिखर पर था ही, यहाँ के रंगे छपे वस्त्र यूरोप और अफ्रीका के देशों में निर्यात होते थे।

उद्देश्य :

1. विभिन्न ठपों (छाप) का अध्ययन करना।
2. पूर्वी व पश्चिमी राजस्थान की भाँत का अध्ययन करना।

महत्त्व :

व्यक्ति का प्रकृति प्रेम उसकी अभिव्यक्ति की सीमा के आधार पर वस्त्रों की छपाई में नजर आता है। राजस्थान के सांस्कृतिक परिवेश का एक बड़ा आधार यहाँ की वर्ण व्यवस्था भी है, जिसके कारण यहाँ के खान–पान एवं रहन–सहन के साथ–साथ यहाँ के पहनावे का वैविध्य बहुत प्रभावी बन जाता है। यहाँ के वस्त्रों के रंग और डिजाइन इस खूबी से तय किये जाते है कि नजदीक से देखने पर यह व्यक्ति के सामाजिक गठन का परिचय दे, विदेशों में एवं भारत भर के विभिनन संग्रहालयों में राजस्थानी भाँत के वस्त्र अपने महत्व को बयां कर रहे हैं एवं विभिन्न फैशन शो में अपनी प्रदर्शनी दर्शाते हैं।

विभिन्न ठप्पों (छाप) का अध्ययन करना

राजस्थान की हस्तकलाओं का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना की पाषाण युगीन मानव का, जब वह शिकार हेतु पत्थर के हथियर बनाना था। भारतीय वस्त्रों की छपाई में विभिन्न प्रकार की भांत, रंग तथा उत्कृष्ट तकनीक सुस्पष्ट तथा विशिष्ट तरीकों के साथ आगे बढ़ी। समाज में विभिन्न जाति के लोगों के लिए विभिन्न रंग तथा भाँत की वेशभूषा निर्धारित की। समाज के रीति रिवाज के अनुकूल भी कपड़े पहने जाते थे।

आज भी बहुत सी जगह पर परम्परागत भांतों का प्रयोग हो रहा है किंतु समय के साथ–साथ कुछ बदलाव भ्झी आता गया है। कुछ भांते शताब्दियों में प्रयुक्त होती आ रही है। जेसे – कैरी, सोसन, पापी, गुलाब, कमल, अंगुर, पशु पक्षी में मोर, तोता, हाथी, ऊँट ज्यामितिय भांत आदि। नए प्रभाव के रूप में ऊँट, घोड़ा विविध फूलों का अंकन आदि। नए प्रभव के कारण बूटे–बूटों

में ना केवल नए तत्वों का समावेश ही हुआ है बल्कि बूटे–बूटियों को आकार एवं रंग योजना के सामंजस्य पर भी विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर के जमाखर्च छापाखाना से पता चलता है कि उस समय कांची बूटी बहुत प्रचलित थी। कई स्थानो पर इस बूटी का उल्लेख मिलता है। उदाहरण के लिए सवाई जयपुर के तहसीलदार कालूराम जी ने कांची बूटी तथा इसके बेल के रंगाई छपाई करवाई।

खासा जोड़ी 3, राउल स्योसिंह जी का जोड़ी 3 कांची बूटी बेल का छापा थान, पजामा 6, कुर्ती 2, सुथन 6, फैटा 6, आलम 8, एक पेची 2।

पूर्वी राजस्थान की भांतों में फूल पत्ती, बेल, बूटे, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, मनुष्याकृति आदि सभी का सफल अंकन हुआ है। इन सबको विधि आकार प्रकार तथा विभिन्न रूपों में संयोजित किया गया है। जो देखने में अत्यंत स्वाभाविक एवं आकर्षण लगाता है जो देखने में अत्यंत स्वाभाविक एवं आकर्षक लगता है।

छींट सांगानेर की सफेद मलमल की में बूटी गुलाब की पता सबज किर कराषाना सु आई ज्या माह बुदि 9 संवत् 1930 छींट सांगानेर की सफेद मलमल की में बूटी सोसनी में पता सबज में फुल सुरज किरकराषाना सु आई ज्या माह बुदि संवत् 1930 बुटी सोसन की ऐजीसी नं. टीसी।

प्रारंभिक 19वीं सदी में सांगानेर का बना एक कपड़ा जिसकी पृष्ठभूमि लाल रंग की है उस पर दाबू विधि द्वारा मक्खियाँ रंग से पेड़ बना है जो कि देखने में झाड़ बूटे की तरह का हैं अन्य एक पर सवाई जैपुर संवत् 1909 लिखा है इसमें लाल और हरे रंग से झाड़ बूटी मखनिया सफेद रंग की जमीन पर बनी है। हल्के नीले रंग की पृष्ठभूमि की पूरी सतह पर कैरी के आका में बूटा बनाया गया है। उसमें कई रंग यथा लाल, पीला, हरा और काले रंग से फूल बनाये गये हैं। इस पर सवाई जैपर संवत् 1872 (1815) छापा है। हल्के नीले रंग की छींट बड़े बूटे केसाथ।

एक दुपट्टे की सफेद रंग की जमीन पर लाल और काले रंग से छपाई हुई है। इस पर सीताराम सीताराम छापा है। सीताराम लाल रंग में तथा दुपट्टे के चारों ओर हाशिया लाल और काले रंग में बनी है। पल्ले पर फूल पत्ती के संयोजन से लाल और काले रंग के साथ बूटा बना है। इस पर विक्रम संवत् 1963 की मुहर है। (1906)

दुपट्टे के नारंगी गेरू जैसे जमीन पर लाल रंग की छपाई हुई है इस पर नागरी लिपि में ''शिवशक्ति सहाय'' छपा है और हाशिये पर रूद्राक्ष भाँत बनी है।

पूर्वी व पश्चिमी राजस्थान की भाँत का अध्ययन करना

पूर्वी राजस्थान के सांगानेर की भांतों में मुख्य रूप से फूल पत्तियों में बारीकी, पत्तियों एवं डालों का घुमाव औ उनकी सुकुमारता मुख्य विशेषता है। बूटों में फूलों का झुकाव प्रायः बांयी ओर दिखाया जाता है। पुरानी सांगानेरी छींटों मेंसोसन, गुलाब, रसगुल्ला, कमल, कुमदिनी, नरगिस, गेंदा, गुल, मेहंदी, सूर्यमुखी, गुलदाऊदी, चंपा, कचनार, जटाधारी, लिली कनेर, केना आदि का संयोजन मिलता है। सोसन तथा गुल्लाला (पापी) के फूल संभवतः सांगानेरी भांतों के अधिक अनुकूल थे।

भांत की यथार्थवादिता का वर्णन करना कठिन है क्योंकि कभी फूल की सुंदर टहनी को शंकु आकार में, कभी गुच्छों के रूप में, कभी फूलदान के साथ फूल को बनाया गया है। भांते परम्परागत ढंग से बनाई जाती है। तिरछे रूप में तथा समान या पूर्व निश्चित दूरी पर भांत पूरी सतह पर बार–बार बनाया जाता है, इसमें हाशिया या विकारा नहीं होता है। इसमें कपड़े को दोनों तरफ से रंगा जाता है तथा भांत की छपाई इस तरह से की जाती है कि ऊपरी तथा निचली दोनों सतहों पर भांत स्पष्ट तथा सजीव जान पड़ती है। ये मुगल शैली से राजस्थानी शैली में एक विकास के रूप में है।

फूलों के अतिरिक्त फलों के अभिप्रायों की भी छपाई मिलती है। यथा जिसमें हमें केला, खजूर, अंगूर, आम आदि की आकृतियाँ मिलती है। फलों के वृक्षों का प्रयोग भी सुंदर ढंग से हुआ है। कुछ पुरानी भांतों में तोता, मछली की आकृतियाँ दिखाई देती है। किंतु लगभग 50 वर्षों से यहाँ हाथी, घोड़ा, ऊँट तथा मोर आदि अंकन मिलता है। मनुष्याकृतियों का भी प्रयोग मुख्य रूप से पर्दे, पलंगपोश, मेजपोश आदि में हो रहा है। विभिन्न बूटे–बूटियों, बेल तथा जालों के नाम छीपाओं ने इनके आकार और उनमें प्रयुक्त फल फूलों के नाम पर रख दिये थे। जैसे पूर्ण राजस्थान में हमें विभिन्न प्रकार की भांते देखने को मिलती है। यथा :–

1. अंगूर बूटी – अंगूर फल की छोटी–छोटी बूटियाँ बनी रहती है।
2. आम की बूटी – आम के आकार में फूल–पत्ती का संयोजन होता है।
3. इलायची की बूटी – इलायची के आकार की बनी छोटी–छोटी बूटियों का समूह होता है।
4. इमली की बूटी – इमली के बाह्य आकार के अंदर फूल पत्ती का संयोजन होता है।
5. कैरी की बूटी – आम के फूल पत्तियों का अलंकरण इस बूटी के विविध प्रकार देखने को मिलते हैं।
6. काजू बूटी – काजू मेवे केअकार से मिलती जुलती बूटी।
7. केला बूटी – केले के वृक्ष के समान लंबे लटकते पत्तों वाले वृक्ष का बूरा
8. कमल बूटी – अधखिला या पूरा खिला कमल का फूल रहता है।

9. गुलाब बूटी – इसमें गुलाब का फूल और पत्ती बनी रहती है।
10. चांद–तारा बूटी – पत्ती के साथ चांद एवं तारा के आकार का फूल बना रहता है।
11. छतरी बूटी – छतरी के आकार की बूटी होती है।
12. चौबूंदी बूटी – समें चार बूंदों का अलंकरण होता है।
13. काचारी बूटी – काचरी बनी होती है। बरसात में होने वाला एक फला
14. चौखाना बूटी – इसमें चाराखानों में पत्तियों का संयोजन होता है।
15. गंगाघाट – इसमें एक मंदिर दिखाया जाता है जिसके नीचे कमल तथा मछलियों से युक्त नदी बनी रहती है।
16. सांगानेरी झाड़ बूटी – नीम के फूलों के संयोजन वाली बूटी।
17. मछली बूटी – मछली की आकृति बनी रहती है।
18. मोरड़ी बूटी – पंख फैलाए मोर बना रहता है।
19. सूरजमुखी बूटी – सूरजमुखी का फूल और पत्ती बना रहता है।
20. त्रिशूल बूटी – त्रिशूल का अंकन रहता है।
21. नागिन सपेरा का बूटा – बूटे में सपेरा को बीन बजाते हुए तथा नागिन को फन उठाये हुए दिखाया जाता है।

पश्चिमी राजस्थान की भांतों में फूल पत्ती, बेल–बूटे, पशु–पक्षी पेड़–पौधे, मनुष्याकृति, व्यक्तीय आदि सभी का सफल अंकन हुआ है। इन सबको निविध अकार–प्रकार में तथा विभिन्न रूपों मं बनाया गया है जो देखने में बड़ा आकर्षक लगता है। इस प्रदेश की छपाई के प्रुख अभिप्राय निम्नलिखित है–

1. अंगूर – अंगूर के फलों का गुच्छा बना है।
2. अंगोछा बूटी – यह बूटी तौलिया में बनती थी।
3. ऊँट बूटी – ऊँट की आकृति बनी रहती है।
4. किनार चादर – पलंगपोश के किनारे पर बनी रहती है।
5. गोल बूटी – यह एक बड़ा बूटा बना रहता है जिसमें ज्यामितीय, फूल पत्ती आदि का समिश्रित विभिन्न अंकन मिलता है।
6. गूंदे की भात – लसोड़े फल के आकार की भांत।
7. घोड़ा सवारी शिवाजी बूटा – घोड़े पर सवारी करते शिवाजी कीआकृति बनी रहती है।
8. ढोला मास की बूटी – राजस्थानी साहित्य के लोकप्रिय नायक नायिका ढोला एवं मारू का ऊँट पर सवार अंकन।
9. दो लाडू किनारे – छाघरे के किनारे पर दोलडू बने रहते हैं।
10. नागोरी का फूल – नागौर में उत्पन्न होने वाला कोई विशेष फूल के आधार पर
11. बेलगाड़ी बूटा – बैलगाड़ी की आकृति बनी हरती है।
12. मोर की बेल – पेड़–पौधे के साथ मोर की आकृति बनी रहती है।
13. मेहराब वाला हाथी बूटा– मेहराब में हाथी की आकृति बनीरहती है।

अजरख पद्धति में प्रयुक्त विशेष भांत

14. खारक चौकड़ा – छुआरे का संयोजन होता है।
15. गैनी – जड़ाऊ शीश फूल आभूषण की तरह।
16. तीन पत्ती या बेलपत्र – बेलपत्र की तरह तीन पत्तियाँ बनी है।
17. मलेर – यह ओठनी और चादार में विशेष रूप से बनती है।
18. हंस बेल (मलीर) हंस के आकार की बूटियाँ।
19. बाराफूली – एक ठप्पे में बारह फूल बने रहते है।
20.

निष्कर्ष : इन समस्त 'बूटा–बूटियों के अतिरिक्त भी बहुत सारी भांत ओर है जिनके प्रयोग अब प्रायः थोड़े कम होते है। भांतों के अतिरिक्त वस्त्रों की सम्पूर्ण जमीन पर विभिन्न प्रकार के जाल, लहरिया, बेल (लता) का भी भराव होता है। इन भांतों में प्रकृति का मनोरम दृश्य प्रतीत होता है जो प्रकृति प्रेम का संदेश देता है। साथ ही प्राकृतिक रंगों का संयोजन शरीर के लिए हानिकारक नहीं होता व राजस्थान के सूखे प्रदेश में भी रंग बिरंगे भांतो के वस्त्रों से यहाँकि छटा बहुरंगी प्रतीत होती है व पिछले कई दशकों से प्रचलन में होने के कारण आज भी पारंपरिक भांत का चलन बना हुआ है।

आज बहुत से ब्यूटी कांटेस्ट, रेम्प वॉक, फैशन शो में इन पारम्परिक भांत के वस्त्रों का प्रदर्शन किया जाता है एवं बहुत सी फेमिना, इंडिगो, फैब इंडिया इत्यादि पत्रिकाओं ने इन्हें दुनर्जीवन प्रदान किया है जो राजस्थान के बहुरंगी वस्त्र छपाई एवं इनकी भांतो को विश्व पटल पर स्थान दिलाते है।

G- 20 समिट 2023 में छीपा समाज के युवा कलाकार श्री योगेश छीपा ने अपनी पारम्परिक रंगाई छपाई कला की इन्हीं बूटियों को उकेरकर, छापकर विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों के सामने लाइव प्रदर्शित किया व रंगाई –छपाई की इस प्राचीन हस्तकला के महत्त्व को दुनिया के सामने दिखाया। वे इस कार्य को अब विश्व में नई डिजाइन एवं दिशा देने के लिए जुटे हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
2. महाराजा मानसिंह संग्रहालय, जोधपुर।
3. सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर।
4. तीतानवाला संग्रहालय, बगरू।
5. डॉ. आशा भगत, राजस्थान गुजरात एवं मध्य प्रदेश की छपाई कला का सर्वेक्षण, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1995
6. गुलाब कोठारी, राजस्थानी की बहुरंगी वस्त्र परम्परा, जयपुर प्रिन्टर्स, 1994
7. गुलाब कोठारी, राजस्थान की रंगाई छपाई, पत्रिका प्रकाशन, 2016
8. गोपीनाथ शर्मा, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, जयपुर, 1989
9. जयसिंह नीरज, बी.एल. शर्मा, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, जयपुर, 2004